शैतानी वसवसो से पन्हा मांगने की बडी अहमियत.

तफसीर इब्ने कसीर/६ से खुलासा.

नोट.- ये PDF कोई भाषा या व्याकरण नही हे,
बल्कि दीन-ए-इस्लाम को समझने के लिये हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

इमाम इब्ने कसीर ने फरमाया की अल्लाह तआला ने सुरे नास मे इन्सान को इस्की हिदायात फरमायी हे की अल्लाह तआला की ये तीन सिफते रब, मलिक, इलाह जिक्र करके उस्से शैतानी वसवसो और उस्के बहकाने से पन्हा मांगनी चाहिये, क्युकी हर इन्सान के साथ एक साथी शैतान लगा हुवा हे, जो हर कदम पर इस कोशिश मे लगा रहता हे, कि इन्सान को तबाह व बरबाद करे, अव्वल तो उस्को गुनाह की दिलचस्पी दिलाता हे, और तरह-तरह से बेहलाकर गुनाहो की तरफ ले जाता हे, अगर इस्मे कामयाब ना हुवा, तो इन्सान जो नेकी और इबादत के काम करता हे, उस्को खराब और बरबाद करने के लिये दिखावे व नमूद और गुरूर व तकब्बुर के वस्वसे दिल मे डालता हे, इल्म वालो के दिलो मे हक और सही अकीदो के मुताल्लिक शुबहे पैदा करने की कोशिश करता हे, उस्की बुरायी से वो ही बच सकता हे जिस्को अल्लाह बचाये.

नबी ए करीम अलैहिस-सलाम ने फरमाया तुम मे कोई

अदमी ऐसा नही जिस पर उस्का साथी शैतान मुसल्लत ना हो, सहाबा ने अर्ज क्या या रसूलल्लाह! क्या आपके साथ भी ये साथी हे? फरमाया हां, मगर अल्लाह तआला ने उस्के मुकाबले मे मेरी मदद फरमायी, और उस्को ऐसा कर दिया कि वो मुझे सिवाये खैर के किसी बात को नही कहता.

इसी तरह मुसलमानों को अपने बारे मे बदगुमानी का मौका देना भी दुरूस्त नही, ऐसे मोको से बचना चाहिये, जिन्से लोगो के दिलो मे बदगुमानी पैदा होती हो, और कोई ऐसा मौका आ जाये, तो बात को साफ करके तोहमत के मौको को खतम कर देना चाहिये, खुलासा ये कि हदीस मे शैतानी वस्वसे का बडा खतरनाक होना साबित किया हे, जिस्से बचना आसान नही, सिवाये अल्लाह की पन्हा के.

यहां जिस वस्वसे से डराया हे उस्से मुराद वो ख्याल हे, जिस्मे इन्सान अपने इख्तियार से मशगूल हो, और गैर-इख्तियारी वस्वसे व ख्याल, जो दिल मे आया और गुजार गया, वो कुछ नुक्सानदेह नही, ना उस्पर कोई गुनाह हे.